समाजीकरण के कारक
(Factors of Socialization)

सामाजिक नियमों के अनुसार जब व्यक्ति व्यवहार करना सीख जाता है, तो इसे समाजीकरण की संज्ञा दी जाती है। इसमें भिन्न-भिन्न तरह के कारकों का योगदान होता है। जिनमें कुछ प्रमुख कारक या साधन निम्नांकित हैं—

→ परिवार (Family) — समाजीकरण के अनेक साधनों में परिवार का महत्व सर्वाधिक है। समाजशास्त्रियों एवं समाज मनोवैज्ञानिकों के अनुसार परिवार ही वह पहली संस्था है, जो बच्चों को शिष्टाचार एवं नैतिक विकास की शिक्षा देकर उसे एक योग्य व्यक्ति बनाता है। परिवार में बच्चों की सबसे पहली अन्तःक्रिया अपने माता-पिता से होती है। अतः, बच्चों के समाजीकरण में उनके माता-पिता द्वारा किया गया व्यवहार सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है। समाज मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये गये अध्ययन के अनुसार — कुछ माता-पिता जिनमें

भूमिका अधिक होती है। अपने बच्चों को बहुत दुलार, प्यार, स्नेह आदि से पालते हैं इससे बच्चों में सामाजिक गुणों एवं सामाजिक व्यवहारों का विकास तेजी से होता है। परंतु कुछ माता-पिता जिनकी भूमिका अधिक होता है अपने बच्चों को अनावश्यक डाँटते, पीटते एवं गाली-गलौज करते हैं ऐसे बच्चों का सामाजिक व्यवहार एवं गुणों का विकास बंद हो जाता है। एक अध्ययन के अनुसार जिन माता-पिता द्वारा अपने बच्चों पर अधिक नियंत्रण या प्रतिबंध लगाया जाता है, उनका समाजीकरण धीमा हो जाता है। वहीं जिन माता-पिता द्वारा बच्चों को थोड़ी आजादी दी जाती, उनके कार्यों में अनावश्यक दखलंदाजी नहीं किया जाता, उनके बच्चों में सहयोगिता, अनुकूलनशीलता, आत्मनिर्भरता आदि जैसे सामाजिक गुण अधिक तेजी से विकसित हुए। निष्कर्षतः माता-पिता का स्नेह, प्यार-दुलार एवं उनके द्वारा एक सीमा तक किए गए नियंत्रण से बच्चों का समाजीकरण अधिक तेजी से होता है।

माता-पिता और बच्चों के बीच अन्तःक्रिया के अलावे परिवार के अन्य कारक जैसे- उसका आकार, अन्य सदस्यों का व्यवहार, परिवार के भौतिक वातावरण का भी प्रभाव समाजीकरण पर पड़ता है। जैसे- जिस परिवार में संचारात्मक उपकरण के आधुनिक साधन जैसे- रेडियो, अखबार, टेलीविजन, मोबाइल आदि मौजूद रहते हैं, उस परिवार के बच्चों का समाजीकरण ऐसे परिवार के बच्चों की अपेक्षा तेजी से होता है, जहाँ इन साधनों की कमी पायी जाती है।

→ साथियों का समूह (Peer group) — परिवार के बाद साथियों का समूह समाजीकरण का एक प्रमुख साधन है। जब बच्चे थोड़ा बड़ा हो जाते हैं तो एक टोली का निर्माण करते हैं, जिनमें बच्चों की उम्र 3 से 5 साल तक होती है। ये आपस में मिलकर भिन्न-भिन्न तरह के खेल खेलते हैं, जिनमें कल्पनात्मक खेल का महत्व अधिक है। जिसमें बच्चे कल्पनात्मक रूप से भिन्न-भिन्न तरह की भूमिका करते हैं। जिनसे उन्हें भूमिका से संबंधित नया-नया अनुभव होता है, जो उन्हें सामाजिक व्यवहार को सीखने में मदद करता है।

NOTES

APPOINTMENTS

मैकांडलेस एवं हार्टअप (1967) के अनुसार इस उम्र के बच्चों की टोली में प्रायः एक बच्चा दूसरे बच्चे पर अधिक ध्यान देता है और दूसरे का अनुमोदन प्राप्त करने की कोशिश करता है। परिणामस्वरूप इन बच्चों में सामाजिक सहयोग की भावना बलवती होती है। जब बच्चे स्कूल में प्रवेश लेते हैं, तो वहाँ भी उनकी एक टोली बनती है, जो बच्चों को सौहार्दिक होना सिखलाती है। स्वाधीनता तथा समाजविरोधी विचारों से ऊपर उठकर एक दूसरे के साथ मिलकर कार्य करने की प्रेरणा विकसित करती है। साथ ही उनमें प्रतियोगिता की भावना भी उत्पन्न होती है, जो बच्चों को अपनी योग्यताओं एवं क्षमताओं को बढ़ाने की प्रेरणा उत्पन्न करती है। इसप्रकार साथियों का समूह बच्चों को समाजीकृत करने में कई ढंग से मदद करता है।

→ विद्यालय (School) — समाजीकरण में विद्यालय भी अहम् भूमिका निभाता है। अनेक समाज मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन के आधार पर बतलाया है कि विद्यालय सिर्फ बच्चों को शिक्षा ही नहीं देता है, बल्कि सामाजिक मूल्यों, सामाजिक संस्थाओं, सामाजिक मानकों आदि के बारे में बच्चों को बताकर समाजीकरण का कार्य करता है। स्कूल के विभिन्न पहलुओं जैसे – उनकी भौतिक संरचना, शिक्षक, पाठ्यपुस्तक आदि का भी समाजीकरण पर विशेष प्रभाव पड़ता है। बार्कर तथा ग्रम्प (1964) ने एक अध्ययन के परिणाम में यह देखा कि छोटे स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे पाठ्येतर कार्य में बड़े स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों की अपेक्षा अधिक रुचि लेते थे। जिससे उनका सामाजिक एवं सांवेगिक विकास तेजी से होता था।

स्कूल में शिक्षक की भूमिका सबसे प्रधान होती है। शिक्षक का व्यक्तित्व तथा उनके द्वारा छात्रों के साथ होने वाली अन्तःक्रियाओं का बच्चों के समाजीकरण पर सीधा प्रभाव पड़ता है। यदि शिक्षक सामाजिक शीलगुणों से पूर्ण है और बच्चों के साथ स्नेहमयी व्यवहार करते

NOTES

Scanned with CamScanner

है, तो इससे बच्चों में प्रोत्साहन तथा उत्साह उत्पन्न होता है, वे शिक्षक के व्यवहारों का अनुकरण करने लगते हैं। बच्चों में सांवेगिक एवं समायोजन करने की क्षमता अधिक बढ़ जाती है। इससे बच्चों का समाजीकरण तेजी से होता है।

स्कूल में भिन्न-भिन्न प्रकार की पाठ्य-सामग्री छात्रों को पढ़ने के लिए दी जाती है जिससे उनमें पाठ्य-पुस्तकों में लिखे गये तथ्यों के आधार पर सामाजिक मनोवृत्ति एवं सांस्कृतिक मूल्यों का निर्माण होता है, जो उनके समाजीकरण में सहायक होती है।

→ पास-पड़ोस (Neighbourhood) — बच्चों के समाजीकरण में पास-पड़ोस का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है। पास-पड़ोस से अन्तःक्रिया द्वारा व्यक्ति नये-नये सामाजिक व्यवहारों एवं मूल्यों को सीखता है। सामाजिक समस्याओं से अवगत होता है और उनके समाधान हेतु अपने विचार व्यक्त करता है। व्यक्ति में सहकारिता एवं परोपकारिता जैसे सामाजिक गुण विकसित होते हैं। इससे उनके समाजीकरण की प्रक्रिया तेजी से होने लगती है।

→ जाति एवं वर्ग (Caste and Class) — भारत में जाति व्यक्ति के जन्म द्वारा निर्धारित होती है, जो अपने सदस्यों के सामने कुछ निश्चित नियम, प्रतिबंध तथा सामाजिक एवं धार्मिक अधिकारों तथा कर्तव्यों का भी निर्धारण करती है। व्यक्ति की सामाजिक मनोवृत्ति एवं सामाजिक मूल्य भी बहुत हद तक जाति प्रथा के नियमों द्वारा ही निर्धारित होता है। जाति के समान ही वर्ग व्यवस्था का भी समाजीकरण पर प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक वर्ग की एक विशेष सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति होती है, जिसके आधार पर उनके सदस्यों में वर्ग चेतना एवं एक निश्चित सामाजिक विचारधारायें पनपती हैं और उनसे व्यक्तियों का समाजीकरण तीव्रता से होता है।

→ भाषा (Language) — भाषा समाजीकरण की प्रक्रिया में एक

NOTES

महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है भाषा के द्वारा ही व्यक्ति अपने विचार, आदर्श, संस्कृति एवं सामाजिक मूल्यों के बारे में खुलकर दूसरे को बतलाता है तथा दूसरों के विचारों, मूल्यों आदि से भी अवगत होता है इस तरह के आदान-प्रदान से व्यक्तियों में समाजीकरण की प्रक्रिया तेजी से होती है।

→ राजनैतिक, आर्थिक एवं धार्मिक संस्थाएँ (Political, Economic and Religious Institutions) — समाजीकरण में भिन्न-भिन्न सामाजिक संस्थाओं जैसे- राजनैतिक, आर्थिक एवं धार्मिक संस्थाओं का भी विशेष महत्व है। जैसे- एक तानाशाह सरकार होने पर जनता के मन में असुरक्षा, हीनता एवं निराशा की भावना उत्पन्न हो जाती है, जिससे उनका समाजीकरण बुरी तरह प्रभावित हो जाता है। वहीं कल्याणकारी सरकार के रहने पर जनता में सुरक्षा, आत्म-विश्वास, सामाजिक स्वतंत्रता आदि शीलगुणों का विकास होता है, जिससे उनका समाजीकरण सरल हो जाता है।

इसीप्रकार, व्यक्ति को अपनी आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के आर्थिक संस्थाओं से जुड़ना पड़ता है। जहाँ वे अन्य व्यक्तियों से अंतःक्रिया करते हैं और नये-नये सामाजिक व्यवहार सीखते हैं, जिससे उनका समाजीकरण तीव्र गति से होता है।

धार्मिक संस्थाओं एवं विचारधाराओं का भी प्रभाव व्यक्ति के समाजीकरण पर काफी पड़ता है। धर्म व्यक्ति में कई तरह के विश्वास, पाप तथा पुण्य का भाव उत्पन्न कर भिन्न-भिन्न तरह के सामाजिक एवं नैतिक शीलगुणों को सीखने में मदद करते हैं। फलस्वरूप व्यक्ति का समाजीकरण तीव्रता से होता है और वह असामाजिक कार्यों से खुद को बचाता है।

इस तरह देखा जा सकता है कि समाजीकरण के बहुत से कारक या साधन हैं, जिनके माध्यम से व्यक्ति का समाजीकरण तीव्रता से होता है। इन साधनों में परिवार, स्कूल एवं साथियों का समूह अन्य साधनों के अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है।

Scanned with CamScanner